१०५१८२७

भ्वादिगण गम्लृ धातु

गम्लृ गतौ।

इषु - गमि - यमां छः।

एषां छः स्यात् शिति। गच्छति। जगाम।

गम - हन - जन - खन - घसां लोपः

क्ङ्यनङि।

अङ्भिन्न अजादि कित् - ङित् प्रत्यय परे होने पर गम्, हन, जन्, खन्, और घस् धातुओं की उपधा का लोप होता है। उदाहरण के लिए लिट् लकार के प्रथमपुरुष एकवचन में 'गम्' धातु से 'तस्' और उसके स्थान पर 'अतुस्' आदि होकर 'जगम्' अतुस् रूप बनता है। इस स्थिति में असंयोगाल्लिट कित। से अतुस्' की कित् संज्ञा होती है। अतः 'अङ्' भिन्न अजादि 'अतुस्' कित् परे होने से 'गम्' की उपधाभूत अकार का लोप होकर 'जग्म् अतुस्' रूप बनेगा। तब रुत्व - विसर्ग करने से 'जग्मतुः' रूप सिद्ध होता है।

गमेरिट् परस्मैपदेषु।

गमेः परस्य सादेरार्धधातुकस्येट् स्यात् परस्मैपदेषु। गमिष्यति। गच्छतु। अगच्छत्। गच्छेत्। गम्यात्।

पुषादि - द्युताद्य् - लृदितः परस्मैपदेषु

श्यन् विकरणपुषादेर्द्युताद्येर्लृदितश्च परस्य च्लेरङ् परस्मैपदेषु। अगमत्। अगमिष्यत्। इति परस्मैपदिनः

कर्तृ परस्मैपद लुङ् परे होने पर पुष् आदि, द्युत् आदि तथा लृदित धातुओं के पश्चात् 'च्लि' के स्थान पर अङ् आदेश होता है।

अनेकाल् होने के कारण यह आदेश अनेकाल् शित् सर्वस्य परिभाषा द्वारा सम्पूर्ण स्थानी के स्थान पर होता है। उदाहरण के लिए 'गम्' धातु लृदित् है, क्योंकि मूल 'गम्लृ' के लकार का इत् होने से लोप होगया है। अतः लुङ् लकार के प्रथम पुरुष एकवचन में तिप् आदि होकर 'अगम् च्लि ति' रूप बनने पर च्लि के स्थान पर 'अङ्' होकर 'अ गम् अङ् ति' रूप होगा। तब ङकार और इकार का लोप करने पर 'अगमत्' रूप सिद्ध होता है।